प्रकाशन तिथि : 15 अगस्त, 2024
प्रेषण तिथि : 19 अगस्त, 2024

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 28 | अंक 11 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

परिवार से बड़ी है समाज और राष्ट्र की जिम्मेदारी: संघप्रमुख श्री

(देशभर में श्रद्धा एवं उत्साह से मनाई तृतीय संघप्रमुख श्री नारायण सिंह रेड़ा की जयंती)

श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेड़ा ने पूज्य तनसिंह जी को प्रेरक माना और उनकी छाया के रूप में कार्य किया। रामचरितमानस में आया है - 'बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।' रामचरितमानस की यह उक्ति जैसे नारायण सिंह जी ने अपने हृदय में समा ली थी और उसी के आधार पर अपना जीवन जीने की कल्पना कर ली थी। 1969 में मात्र 29 वर्ष की आयु में नारायण सिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के तृतीय संघप्रमुख बने। अपने संघप्रमुख काल में श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य में और पूज्य तनसिंह जी की सेवा में वे इतने तत्पर रहा करते थे कि कई बार साल-साल भर तक वह अपने घर नहीं जाया करते थे। उनकी पत्नी भी थीं, उनके बच्चे भी थे, उनके भाई भी थे, माता-पिता भी थे, सारी जिम्मेदारी भी थी लेकिन सारी जिम्मेदारियों से अधिक समाज की सेवा, पूज्य तनसिंह जी की सेवा और श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य को उन्होंने महत्व दिया। लोग कह सकते हैं कि जो अपने परिवार की जिम्मेदारी नहीं निभाता तो वह कैसा व्यक्ति है? लेकिन हम हमारे इतिहास को उठाकर यदि देखें तो जिन्होंने भी इतिहास बनाने का कार्य किया, जिन्हें हम महापुरुष की श्रेणी में मानते हैं, जिनकी हम जयंतियां मनाते हैं, उन्होंने अपने परिवार की चिंता नहीं की, उन्होंने समाज को सर्वोपरि माना। दुर्गादास राठौड़ 30 वर्ष तक जंगल में घोड़े की पीठ पर बैठे-बैठे भाले से रोटी सेंक कर खाते रहे, महाराणा प्रताप इस समाज को स्वाधीन करने के लिए 25 वर्षों तक जंगल में भटकते हैं, चंद्रसेन राठौड़ 30 वर्ष तक संघर्ष करते रहे तो क्या हम यह कह सकते हैं कि वे अपने परिवार की जिम्मेदारी नहीं निभा रहे थे। परिवार की जिम्मेदारी समाज की जिम्मेदारी से बड़ी नहीं हो सकती। जिनको समाज की और राष्ट्र की सेवा करनी होती है, जिम्मेदारी निभानी होती है, वह अपने परिवार में नहीं डूबा करते हैं। ऐसा ही नारायण सिंह जी ने किया और इसीलिए हम आज नारायण सिंह जी को याद कर रहे हैं। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने 30 जुलाई को श्री क्षत्रिय युवक संघ के तृतीय संघप्रमुख श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेड़ा की जयंती के उपलक्ष्य में संघशक्ति जयपुर में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि पूज्य नारायण सिंह जी का जीवन साधारणताओं से शुरू होकर असाधारणताओं की ओर अग्रसर होता है। 30 जुलाई 1940 को मंगलवार के दिन चुरू जिले के एक मरुस्थलीय गांव रेड़ा के एक साधारण राजपूत परिवार में हरिसिंह जी के पुत्र के रूप में उनका जन्म हुआ। पढ़ाई के लिए वे बीकानेर गए और वहां रहते हुए मात्र 9 वर्ष की आयु में उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ का पहला शिविर किया और उस शिविर में ही उन्होंने साधारण से असाधारण बनने का मार्ग ढूंढ लिया। बीकानेर में वे संघ की शाखा में नियमित जाया करते थे। परिवार की आर्थिक स्थिति साधारण थी। नारायण सिंह जी पांच भाइयों में सबसे बड़े थे, घर की पूरी जिम्मेदारी उनके पास में थी इसलिए पढ़ाई छोड़कर उन्हें नौकरी करनी पड़ी।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

ढींगसरी गांव की बेटियों ने किया राजस्थान को गौरवान्वित

9 अगस्त को जूनियर गर्ल्स नेशनल फुटबॉल चैंपियनशिप 2024-25 के फाइनल में बेलगाम (कर्नाटक) में मेजबान कर्नाटक को 3-1 से हराकर राजस्थान ने 60 वर्षों में अपना पहला राष्ट्रीय स्तरीय महिला अंडर-17 फुटबॉल खिताब जीता है। इस फुटबॉल टीम में शामिल 12 खिलाड़ी बीकानेर के नोखा कस्बे के एक छोटे से गांव ढींगसरी की रहने वाली हैं, जिनमे कप्तान संजू राजवी सहित अधिकांश खिलाड़ी राजवी राठौड़ राजपूत परिवार की हैं। ये सभी बालिकाएं ढींगसरी गांव में स्थित 'श्री मगनसिंह राजवी फुटबाल एकेडमी' की प्रशिक्षु हैं। गांव के ही विक्रमसिंह राजवी इनके प्रशिक्षक हैं। उल्लेखनीय है कि आरएसी में कमांडेंट रहे इसी गांव के मगनसिंह राजवी भारत की राष्ट्रीय फुटबॉल टीम के कप्तान रह चुके हैं व ओलंपिक में खेल चुके हैं। मगन सिंह को अर्जुन अवार्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है।

उदयपुर में बालिका बाल शिविर संपन्न

उदयपुर के श्याम नगर में स्थित मीरा मेदपाट भवन में श्री क्षत्रिय युवक संघ का दो दिवसीय बालिका बाल शिविर 3-4 अगस्त को आयोजित हुआ। शिविर में 5 से 13 वर्ष की पांचवी कक्षा तक की बालिकाएं शामिल हुई। शिविर का संचालन रश्मि कंवर रामदेरिया द्वारा किया गया। शिविर में बालिकाओं को खेल, सहगीत आदि विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से संघ का प्रारंभिक परिचय कराया गया एवं सामूहिक जीवन का अभ्यास करा कर पारिवारिक भाव को गहन बनाने के लिए अनुकूल व स्नेहपूर्ण वातावरण उपलब्ध कराया गया।

समारोहपूर्वक मनाई अनंगपाल तोमर की जयंती

जैसलमेर जिले के रामदेवरा कस्बे में स्थित रुणिचा कुंआ के चिलाय माता मंदिर प्रांगण में क्षत्रिय सम्राट अनंगपाल तोमर की 1023वीं जयंती 4 अगस्त को समारोह पूर्वक मनाई गई। स्थानीय विधायक महन्त प्रताप पुरी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि महापुरुषों की जयंतियों के आयोजन का मुख्य उद्देश्य यह है कि हम उनके जीवन के संघर्षों व त्याग से प्रेरणा लेकर स्वयं भी वैसा जीवन जीने का प्रयत्न करें। उन्होंने जिस प्रकार राष्ट्र, धर्म और संस्कृति की रक्षा के दायित्व को निभाया, उसी प्रकार हमें भी राष्ट्र सेवा में लगना है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि अनंगपाल जी जैसे हमारे पूर्वजों ने अपने जीवन में जो कर्म किए, उन्हीं के परिणाम स्वरूप हम आज भी गौरवपूर्ण जीवन जी रहे हैं। हमें भी ऐसे कर्म करने चाहिए कि हमारी आने वाली पीढ़ी गौरवान्वित हो। उन्होंने कहा कि समाज के निर्माण में मातृशक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसलिए हमें उनके साथ सम्मान पूर्ण आचरण करना चाहिए। क्षत्रिय तोमर राजसभा दिल्ली के प्रकाश सिंह तंवर ने अनंगपाल तोमर के जीवन चरित्र के बारे में विस्तार से बताया और दिल्ली में स्थित उनके स्मारकों के पुनरोद्धार की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम को पूर्व प्रधान सुनीता भाटी, कैप्टन गोरधनसिंह अर्जुना, अर्जुन सिंह तंवर आदि ने भी संबोधित किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के जैसलमेर संभाग प्रमुख गणपत सिंह अवाय ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी। भोमसिंह तंवर ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में जैसलमेर के पूर्व विधायक सांग सिंह भाटी, साकड़ा प्रधान भगवत सिंह तंवर, रतनसिंह बाप, रामदेवरा सरपंच समन्दर सिंह तंवर सहित अनेकों गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रांत प्रमुख अमर सिंह रामदेवरा ने किया। कार्यक्रम में राठौड़ा, देदोलाई, सादा , छायण, आसकन्द्रा, पोकरण, साकड़ा, फलसूण्ड आदि क्षेत्रों के समाजबंधु शामिल हुए।

बुटाटी में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की दो दिवसीय कार्यशाला संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के डीडवाना-कुचामन एवं नागौर जिले की दो दिवसीय कार्यशाला 3-4 अगस्त को बुटाटी धाम में संपन्न हुई। कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों से चर्चा करते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने कहा कि आज समाज में जो निराशा का भाव विकसित हो रहा है, उसको रोकने के लिए समाज के सकारात्मक भाव वाले युवाओं को संयोजित कर उन्हें समाज कार्य में सक्रिय करना होगा। सामाजिक कार्य में वही सक्रिय रह सकता है जिसमें त्याग की क्षमता हो और इसीलिए संघ समाज की युवा पीढ़ी को त्यागपूर्ण जीवन का व्यावहारिक अभ्यास करवा रहा है। कार्यशाला में

उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने भी दोनों जिलों में फाउंडेशन के कार्यों को गति देने हेतु चर्चा की और आगामी गतिविधियों की रूपरेखा तय की। कार्यशाला में देवेन्द्र सिंह बुटाटी, अजीत सिंह चांदारूण, नारायण सिंह गोटन, संघ के नागौर प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल, डीडवाना प्रांत प्रमुख जय सिंह सागूबड़ी, फाउंडेशन के नागौर जिला प्रभारी जब्बर सिंह दौलतपुरा, बसंत सिंह बरसिंहपुरा, पवन सिंह बुटाटी, मानवेंद्र सिंह चुवा, आजाद सिंह, रविन्द्र सिंह, जितेंद्र सिंह, विजेन्द्र सिंह, हिम्मत सिंह, मगन सिंह सहित 60 समाजबंधुओं ने भाग लिया।

गोहिलवाड़ व मध्य गुजरात संभाग में संपर्क यात्राओं का आयोजन

शाखा वर्ष के निमित्त गोहिलवाड़ संभाग में मोरचंद एवं भावनगर प्रांत में 4 अगस्त को मातृशक्ति संपर्क यात्रा का आयोजन किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदासकाबास एवं निशाबा लिंबोली ने भावनगर, अवानियां, मोरचंद एवं गुदी की यात्रा कर यहां लगने वाली मातृशक्ति शाखाओं की स्वयंसेविकाओं से भेंट की एवं शाखा में नियमितता एवं निरंतरता के महत्व पर चर्चा की। संभाग के झालावाड़ प्रांत के तनमनिया गांव में भी 10 अगस्त को एक संपर्क बैठक आयोजित की गई जिसमें गांव में श्री क्षत्रिय युवक संघ की साप्ताहिक शाखा प्रारंभ करने का निर्णय हुआ। सितंबर माह में यहां आयोजित होने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर की तैयारी के संबंध में भी चर्चा हुई। मध्य गुजरात संभाग के अरवल्ली एवं

महीसागर प्रांत में भी संपर्क यात्रा का आयोजन हुआ जिसमें चार अलग-अलग दल बनाकर विभिन्न गांवों में संपर्क किया गया। यात्रा के दौरान मालपुर में आयोजित होने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के संबंध में समाजबंधुओं को जानकारी दी गई। महीसागर प्रांत प्रमुख पूर्णचंद्र सिंह छेल्लीघोडी सहयोगियों सहित यात्रा में उपस्थित रहे।

मुंबई और पोकरण में शाखा भ्रमण कार्यक्रम

मुंबई के भायंदर में लगने वाली शाखाओं का भ्रमण कार्यक्रम 4 अगस्त को संपन्न हुआ जिसमें नारायण शाखा एवं मल्लीनाथ शाखा के स्वयंसेवकों ने अंबरनाथ महादेव और बदलापुर महादेव के दर्शन किए, साथ ही झरनों में नहाने का आनंद लिया। सहगीतों एवं संघ चर्चा के साथ सभी ने अपनत्व के भाव से परिपूरित होकर यात्रा को पूर्ण किया। इसी प्रकार पोकरण शहर की शाखाओं का एक दिवसीय सामूहिक भ्रमण कार्यक्रम 11 अगस्त को रखा गया जिसमें पोकरण दुर्ग, बालीनाथ धूना, सालम सागर, रामदेवसर तालाब, खिमज माता मंदिर, कैलाश टेकरी आदि स्थानों का भ्रमण किया गया।

विभिन्न स्थानों पर विशेष शाखाओं एवं सामूहिक यज्ञ का आयोजन

देवनारायण जी का देवरा मंदिर परिसर अमरपुरा, धनेश्वर महादेव (भदेसर) में श्री क्षत्रिय युवक संघ की विशेष शाखा एवं सामूहिक यज्ञ का आयोजन 28 जुलाई को किया गया। 4 अगस्त को चित्तौड़गढ़ प्रांत के चंदेरिया में एवं 11 अगस्त को भदेसर तहसील की करेडिया पंचायत के गांव मनरूप खेड़ा में भी विशेष शाखा एवं सामूहिक यज्ञ का आयोजन हुआ। तीनों कार्यक्रमों में श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने उपस्थित समाजबंधुओं को संघ व पूज्य श्री तनसिंह जी का परिचय दिया।

दुर्गा महिला शाखा भायंदर ने मनाया लहरिया महोत्सव

दुर्गा महिला शाखा भायंदर की स्वयंसेविकाओं द्वारा उत्सव हॉल, नवघर रोड़, भायंदर पूर्व में 10 अगस्त को सुबह 11 से शाम 5 बजे तक लहरिया महोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान मातृशक्ति द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं शाखा में संख्या बढ़ाने आदि पर चर्चा हुई।

मानसिंह मऊ को साहित्य रत्न सम्मान

वरिष्ठ कवि एवं साहित्यकार मानसिंह मऊ को चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था की ओर से साहित्य रत्न सम्मान प्रदान किया गया। संस्थान द्वारा अपने 44वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर नवलगढ़ क्षेत्र के बाघ सिंह का जोहड़ में 30 जुलाई को आयोजित मुंशी प्रेमचन्द जयंती समारोह के दौरान मऊ को यह सम्मान दिया गया। ठाकुर आनंद सिंह शेखावत की अध्यक्षता में सम्पन्न इस कार्यक्रम में अनेकों कवि एवं साहित्यकार शामिल हुए। मान सिंह मऊ श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हैं।

सौभाग्य सिंह कैलाशनगर बने राजस्थान राजपूत परिषद मुंबई के अध्यक्ष

राजस्थान राजपूत परिषद मुंबई की बैठक 28 जुलाई को भायंदर में आयोजित की गई जिसमें सिरोही जिले के कैलाशनगर के निवासी सौभाग्य सिंह देवड़ा को सर्वसम्मति से संस्था का अध्यक्ष चुना गया । परिषद के ट्रस्टबोर्ड चैयरमेन रतन सिंह तुरा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष का सम्मान किया। बैठक में संस्था के मुख्य संरक्षक रघुनाथ सिंह सराणा, पूर्व अध्यक्ष महेंद्र सिंह राठौड़, अनोप सिंह करड़ा सहित अनेकों कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे। बैठक में संस्था का वर्ष 2023-24 का लेखा जोखा भी प्रस्तुत किया गया।

श्री राजपूत सभा भवन में राजपूत विधायकों का किया सम्मान

श्री राजपूत सभा जयपुर द्वारा श्री राजपूत सभा भवन में 1 अगस्त को राजस्थान विधानसभा के राजपूत विधायकों की एक बैठक आयोजित की गई जिसमें सभा की ओर से स्मृति चिह्न भेंट कर विधायकों का सम्मान किया गया। राजेन्द्र सिंह राठौड़ (पूर्व नेता प्रतिपक्ष), श्रवण सिंह बगड़ी (प्रदेश महामंत्री, भारतीय जनता पार्टी राजस्थान), प्रेम सिंह बाजौर (अध्यक्ष सैनिक कल्याण बोर्ड राजस्थान सरकार), महंत प्रतापपुरी (विधायक पोखरण), सुरेन्द्र सिंह राठौड़ (विधायक कुंभलगढ़), हमीर सिंह भायल (विधायक सिवाना), चन्द्रभान सिंह (विधायक चित्तौड़गढ़), बाबू सिंह राठौड़ (विधायक शेरगढ़), छोटू सिंह भाटी (विधायक जैसलमेर), मनोज न्यांगली (विधायक शादुलपुर), कल्पना देवी (विधायक लाडपुरा), विश्वराज सिंह मेवाड़ (विधायक नाथद्वारा), वीरेन्द्र सिंह कानावत (विधायक मसूदा), विक्रम सिंह जाखल (विधायक नवलगढ़), अंशुमान सिंह भाटी (विधायक कोलायत) एवं रविन्द्र सिंह भाटी (विधायक शिव) आदि जनप्रतिनिधियों ने बैठक में भाग लिया एवं समाज के चहुंमुखी विकास में आ रही समस्याओं पर चर्चा की और समाज के लिए हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। सभाध्यक्ष राम सिंह चन्दलाई ने श्री राजपूत सभा द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्यों की जानकारी देते हुए केन्द्रीय सेवाओं में ईडब्ल्यूएस के सरलीकरण, सरकारी नियुक्तियों, विभिन्न बोर्ड एवं मंत्रिमंडल आदि में समाज को उचित प्रतिनिधित्व की मांग रखी गई। श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। मंच संचालन धीर सिंह शेखावत एवं सुरेन्द्र सिंह नरूका ने किया एवं हेमेन्द्र कुमारी दूदू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

नागौर संभाग की कार्ययोजना बैठक संपन्न

माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास द्वारा विभिन्न संभागों में किए जा रहे प्रवास के क्रम में 10-11 अगस्त को नागौर संभाग में प्रवास किया गया जहां उनके सान्निध्य में नागौर संभाग की दो दिवसीय कार्ययोजना बैठक कुचामन सिटी स्थित संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन में साधना संगम संस्थान के तत्वावधान में आयोजित हुई। संघप्रमुख श्री ने बैठक में उपस्थित स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए अष्ट सूत्री कार्यक्रम के महत्व को समझाया एवं शाखा वर्ष के दौरान शाखाओं की संख्या बढ़ाने, शाखा के कार्यक्रम को अधिक रोचक बनाने के उपायों आदि पर चर्चा की। नागौर संभाग प्रमुख शिम्भु सिंह आसरवा ने पूरे वर्ष की कार्य योजना प्रस्तुत की एवं आगामी दिनों में संभाग के नागौर, लाडनूं, कुचामन, डीडवाना व मकराना प्रांत में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के आयोजन, संभाग में उच्च प्रशिक्षण शिविर के प्रस्ताव, विभिन्न शाखाओं, स्नेहमिलन समारोह, महापुरुषों की जयंतियों आदि के आयोजन पर चर्चा की। केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे। नागौर, खींवसर, जायल, डेगाना, मकराना, डीडवाना, परबतसर, कुचामन, नांवा आदि तहसीलों से स्वयंसेवक बैठक में उपस्थित रहे।

भांकरोटा (जयपुर) में मासिक स्नेहमिलन संपन्न

जयपुर संभाग का मासिक स्नेहमिलन 4 अगस्त को भांकरोटा, अजमेर रोड, जयपुर में आयोजित हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक राजेंद्र सिंह बोबासर ने पूज्य तनसिंह जी एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में उपस्थित समाजबंधुओं को जानकारी दी। प्रांत प्रमुख दीप सिंह सामी ने शाखा वर्ष की जानकारी देते हुए क्षेत्र में संघ की शाखा प्रारंभ करने की बात कही। स्थानीय समाजबंधु रूप सिंह राठौड़ ने अपने विचार रखते हुए शिविर व शाखा के आयोजन में सभी के द्वारा सहयोग देने की बात कही। श्योदान सिंह राजावत ने दोहों एवं सोरठो के माध्यम से क्षत्रिय जाति के गौरवमयी इतिहास की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र सिंह बड़वाली ने किया।

धरियावद, आजबर और भाटा में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

प्रतापगढ़ जिले के धरियावद कस्बे में स्थित साँवरिया भवन में श्री क्षत्रिय युवक संघ का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 8 से 11 अगस्त तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि संघ हमें हमारी उस नींद से जगाने का कार्य कर रहा है जिसके वश में होकर हम अपने कर्त्तव्य को भूल गए हैं। इस शिविर के रूप में हम सब के सामने एक ऐसा अवसर आया है जब हम अपने आपको जागृत बनाकर समाज को जागृत करने के कार्य में भागीदार बन सकते हैं। शिविर में पारेल, धरियावद, घटेला, भाण्डला, झालों का खेड़ा, कल्याणपुरा, हीरापुर, मांगरोल, म्याला, बरोठा करवा, दुकवाड़ा, लाम्बापारडा, सज्जन सिंह का गड़ा, वालाई, गेहूवाड़ा आदि स्थानों के 118 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के समापन कार्यक्रम में भानुप्रताप सिंह, दिग्विजय सिंह पारेल, योगेंद्र सिंह लिम्बरवाड़ा, शिवराज सिंह मुंगाना, मदन सिंह घटेला, बाघ सिंह शिकारवाड़ी सहित क्षेत्र के अनेकों समाजबंधु शामिल हुए। जालौर संभाग में आजबर गांव स्थित श्री कुलेटी माताजी मंदिर परिसर में भी इसी अवधि में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि जिस समाज में हमने जन्म लिया है, उसके प्रति हमारा क्या दायित्व है, उसको समझाने के लिए संघ ने हमें इस शिविर में आमंत्रित किया है। पूज्य तनसिंह जी ने किस उद्देश्य से श्री क्षत्रिय युवक संघ का निर्माण किया, यह समझने के लिए यहां की प्रत्येक गतिविधि में पूरे मनोयोग से भाग लेवें। यदि हम उस उद्देश्य को समझ लेंगे तो हम समाज के प्रति अपने दायित्व को भी समझ सकेंगे और उसे पूरा करने का मार्ग भी हमारे सामने स्पष्ट हो जाएगा। शिविर में आकोली, देलदरी, बिबलसर, मांडोली, कोलर, बूगांव, डोरडा, चेकला, पुनक, देसु, कावतरा, सिकवाड़ा, वाडका, गोगा आदि गांवों के 112 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। 8 से 11 अगस्त तक बालोतरा जिले के भाटा गांव में स्थित गोगाजी का धोरा मंदिर में भी एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। शिविर प्रमुख जसवंत सिंह बुड़ीवाड़ा ने प्रथम दिन शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि संगठन की शक्ति के बिना समाज शक्तिशाली नहीं बन सकता। वर्तमान युग में जो समाज संगठित है वही अपनी और दूसरों की रक्षा कर सकता है। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें एक सूत्र में बांधने का कार्य कर रहा है। शिविर के अंतिम दिन शिविरार्थियों को विदाई देते हुए उन्होंने कहा कि जो कुछ भी आपने इस शिविर में सीखा है उसे बार-बार अभ्यास करके अपने आचरण का अंग बनाएं, तभी हम संगठन की एक मजबूत कड़ी बन सकेंगे। शिविर में क्षेत्र के विभिन्न गांवों के 200 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

धरियावद

भाटा

आजबर

संपादकीय

दायित्व बोध और सामर्थ्य का निर्माण

प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन काल में बहुत कुछ करना चाहता है। यद्यपि बहुत कुछ कर गुजरने की यह चाह अत्यंत व्यापक है और अपने स्वयं के जीवन के सभी क्षेत्रों में उच्चतम शिखरों को प्राप्त करने से लेकर पूरे संसार को अपनी इच्छानुसार बदल देने की चाह प्रत्येक मनुष्य के अंतर्मन में पलती ही है, तथापि इस चाह की अभिव्यक्ति सभी व्यक्तियों में अलग-अलग प्रकार से होती है। कोई पुरुषार्थ और अध्यवसाय का मार्ग अपनाकर इस चाह को पूरी करने में अपना पूरा जीवन लगा देता है, कोई जीवन की कठोर वास्तविकताओं से पाला पड़ने पर इस चाह को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने के लिए समझौतावादी जीवन को स्वीकार कर लेते हैं तो कोई इस चाह को पूरा करने में स्वयं को असमर्थ पाकर भी इस असमर्थता को झुठलाने के प्रयत्न में थोथे दावों और परछिद्रान्वेषण का मार्ग अपनाकर आत्मसंतुष्टि का मिथ्या प्रयास करते हैं। अभिव्यक्तियों के उपरोक्त ढंग ही किसी को महापुरुष की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देते हैं, किसी को सीमित और सामान्य व्यक्तित्व में ढाल देते हैं तो किसी को नकारात्मकता का प्रतिनिधि बना देते हैं। अवचेतन मन में समान प्रकार की चाह होते हुए भी वे कौनसे तत्व अथवा कारक हैं जिनके प्रभाव से भिन्न-भिन्न अभिव्यक्ति पाकर कोई व्यक्ति महान, कोई सामान्य और कोई नकारात्मक बन जाता है, इसकी विवेचना हमें आत्मचिंतन के नए आधार प्रदान कर सकती है।

हमारे व्यक्तित्व की दिशा निर्धारित करने वाले कारकों में सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं - अपने दायित्व का ज्ञान और उसके निर्वहन के लिए आवश्यक सामर्थ्य। दायित्व और सामर्थ्य के प्रश्न को जो हल कर लेता है, उसके लिए जीवन का लक्ष्य और मार्ग भी स्पष्ट हो जाता है। चूंकि हमारा कार्यक्षेत्र समाज है इसलिए सामाजिक कार्य के परिप्रेक्ष्य में दायित्व और सामर्थ्य के प्रश्न को समझने का प्रयत्न अधिक उपयोगी और सरल होगा। जैसा कि आलेख के प्रारंभ में बताया गया कि हम सब बहुत कुछ करना चाहते हैं, उच्चतम और श्रेष्ठतम को प्राप्त करना चाहते हैं, संसार को बदलना चाहते हैं लेकिन प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक कार्य नहीं कर सकता इसलिए हर व्यक्ति को तय करना पड़ता है कि उपलब्ध अनेकों विकल्पों में से कौन सा कार्य करना उसके लिए सर्वाधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण है। वही कार्य उसका दायित्व होगा। सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत होने पर समाज के प्रति भी हमारे प्रबल भाव होते हैं, हम अपने समाज को ऊंचाइयों पर ले जाना चाहते हैं, उसके लोगों की समस्त बुराइयों और कमजोरियों को दूर करना चाहते हैं, पूरे समाज को बदलकर नया रूप देना चाहते हैं लेकिन यह सब किसी एक व्यक्ति के लिए अपने जीवन काल में कर लेना संभव नहीं है क्योंकि व्यक्ति की तुलना में समाज बहुत अधिक विराट है। ऐसी स्थिति में समाज के लिए उपरोक्त चाह रखने वाले व्यक्ति को सर्वप्रथम यह तय करना पड़ेगा कि इन चाहों को पूरा करने के लिए वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अनिवार्य कौन से कार्य को मानता है, वही कार्य उसका दायित्व होगा। इस दायित्व को निर्धारित करने अथवा उसे समझने में अक्सर व्यक्ति भूल कर जाता है और वहीं से उसके व्यक्तित्व निर्माण की दिशा भी गलत हो जाती है। समाज भौतिक रूप से समृद्ध बन जाए, समाज के अधिक से अधिक राजनेता और अधिकारी बन जाएं, समाज के इतिहास को संरक्षित और प्रसारित किया जाए, समाज को संगठित करने के लिए संस्थाएं बनाई जाएं, समाज में फैली कुरीतियों को हटाया जाए, शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में समाज को आगे बढ़ाया जाए इत्यादि अनेकों ऐसे कार्य हैं जो समाज के प्रति चिंतन करते हुए हमें अपने दायित्व लग सकते हैं लेकिन जैसा पहले बताया गया कि प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक कार्य नहीं कर सकता, इसलिए यह दुविधा खड़ी होती है कि इनमें से कौनसे दायित्व को अपनाया जाए और कौनसे को छोड़ा जाए।

दायित्व निर्धारण की इस प्रक्रिया में व्यक्ति तीन प्रकार के निर्णय ले सकता है। पहला - व्यक्ति सभी कार्यों को अपना दायित्व मानने का दुराग्रह कर लें। दुराग्रह इसलिए कि यह सभी कार्य करना किसी एक व्यक्ति के लिए संभव नहीं है और ऐसे में यह लक्ष्य कभी भी प्राप्त करना संभव नहीं होगा। ऐसी स्थिति में इस दुराग्रह पर टिके रहने की जिद में व्यक्ति अहंवादी और नकारात्मक बनने की ओर अग्रसर हो जाता है और अपनी अदूरदर्शिता और असमर्थता के कारण प्राप्त होने वाली विफलता का कारण दूसरों को सिद्ध करने का प्रयत्न करता रहता है। दूसरा - व्यक्ति यह समझकर कि समाज की सभी आवश्यकताओं को वह पूरा नहीं कर सकता, किसी एक या एकाधिक आवश्यकता को पूरी करने के लिए अपनी सुविधा एवं क्षमता के अनुसार प्रयास करे। ऐसी स्थिति में व्यक्ति व्यावहारिक बनने का प्रयास करता है लेकिन इस प्रयत्न में समाज की आवश्यकता की अपेक्षा उसकी अपनी सुविधा और क्षमता अधिक महत्वपूर्ण बन जाती है और इसीलिए उसके प्रयास एकांगी, सीमित और समझौतावादी बन जाते हैं। तीसरा - व्यक्ति सभी सन्नद्ध दायित्वों में से उस दायित्व को चुने जो समाज के लिए सर्वाधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण है, जो प्राथमिक और मूल आवश्यकता हो और जिसके पूरा होने पर अन्य सभी आवश्यकताओं के पूरा होने का मार्ग भी खुल जाए। यही वास्तविक दायित्व है जिसे चुनना व्यक्ति की अपनी सुविधा और क्षमता पर नहीं बल्कि समाज की सर्वोपरि आवश्यकता पर निर्भर करता है। यही वर्तमान का दायित्व है और वर्तमान के दायित्व को पूरा करके ही भविष्य के लिए भी आधारभूमि तैयार की जा सकती है। इस दायित्व को पहचानना और उसे पूरा करने में पूरी निष्ठा से जुट जाना ही महान व्यक्तित्व के निर्माण की भी प्रक्रिया है।

अपने वास्तविक दायित्व को पहचानना जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण इस बात की पहचान करना भी है कि उस दायित्व को पूरा करने के लिए आवश्यक सामर्थ्य हमारे भीतर है अथवा नहीं। यदि हमारे निश्चित किए हुए दायित्व को पूरा करने का सामर्थ्य हमारे भीतर नहीं है तो उस दायित्व को अपना दायित्व मानना अथवा उसे पूरा करने का प्रयास करना आकाश कुसुम की भांति ही होगा। इस दृष्टिकोण से हमारा दायित्व वास्तव में केवल वही है जिसे पूरा करने का हमारे पास सामर्थ्य है। अतः यदि हमने ऐसा दायित्व चुन लिया है जिसे पूरा करने का सामर्थ्य हमारे पास नहीं है तो वह दायित्व हमारा दायित्व नहीं रहा बल्कि उस सामर्थ्य को जुटाना ही हमारा सर्वप्रथम दायित्व बन जाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसीलिए दायित्व बोध के जागरण और उस दायित्व के निर्वहन के लिए आवश्यक सामर्थ्य के निर्माण के दोहरे कार्य में जुटा हुआ है। आएं, हम भी समाज के प्रति अपने वास्तविक और सर्वोपरि दायित्व को पहचानें और संघ के साथ उस दायित्व के पालन के लिए सामर्थ्य जुटाने की प्रक्रिया के अंग बनें।

राजकुल सांस्कृतिक संस्था ने फरीदाबाद में मनाई तीज

फरीदाबाद के सेक्टर 8 में स्थित महाराणा प्रताप भवन में 7 अगस्त को राजकुल सांस्कृतिक संस्था (रजि.) द्वारा हरियाली तीज का त्यौहार मनाया गया। इस अवसर पर मातृशक्ति द्वारा सांस्कृतिक नृत्य का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान 10वीं एवं 12वीं कक्षा में 85% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले समाज के विद्यार्थियों को संस्था द्वारा सम्मानित भी किया गया। राजकुल संस्था के अध्यक्ष नारायण सिंह पांडुराई ने संस्था द्वारा किए जाने वाले कार्यों की जानकारी दी एवं सभी का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन गीता चौहान ने किया। कार्यक्रम में सैकड़ो की संख्या में समाजबंधुओं एवं मातृशक्ति की उपस्थिति रही।

साहिबाबाद में अखंड राजपूताना सेवा संस्थान की बैठक संपन्न

अखंड राजपूताना सेवा संस्थान की एक बैठक शक्ति खंड 3 इंदिरापुरम, साहिबाबाद में 11 अगस्त को आयोजित की गई जिसमें वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की मूर्ति के लोकार्पण, संगठन के पुनर्गठन और अन्य विषयों पर चर्चा हुई। बैठक की अध्यक्षता संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष के पी सिंह ने की तथा संचालन राष्ट्रीय महासचिव वी पी सिंह द्वारा किया गया। उल्लेखनीय है कि अखंड राजपूताना सेवा संस्थान द्वारा वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की मूर्ति कनावनी नहर पुलिया वसुंधरा पुलिस चौकी के पास स्थापित की जा चुकी है जिसका अभी लोकार्पण किया जाना बाकी है।

श्री राजपूत यूथ वेट्स क्लब राजूवास बीकानेर का वार्षिक स्नेहमिलन संपन्न

बीकानेर में स्थित कपिलधारा रिजॉर्ट में श्री राजपूत यूथ वेट्स क्लब राजूवास का वार्षिक स्नेह मिलन कार्यक्रम 'रणभेरी' 10 अगस्त को पशुपालन विभाग निदेशक डॉ. भवानी सिंह राठौड़, श्रीमती राजकुमारी राठौड़ धर्मपत्नी स्व. डॉ. सोहन सिंह राठौड़, प्रोफेसर (डॉ.) अवधेश प्रताप सिंह कुशवाहा (अधिष्ठाता एवं संकायाध्यक्ष पशु चिकित्सा) के आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस वर्ष का कार्यक्रम विश्व विख्यात पशु चिकित्सा विशेषज्ञ स्व. डॉ .सोहन सिंह को समर्पित किया गया। महाविद्यालय के छात्र प्रदीप सिंह भाटी एवं भानु प्रताप सिंह बेलासर द्वारा तैयार स्व. डॉ. सोहन सिंह के संघर्षपूर्ण जीवनवृत्त पर प्रकाश डालती हुई डॉक्यूमेंट्री भी प्रस्तुत की गई, साथ ही डॉ. सोहन सिंह की स्मृति में पुस्तक बैंक का उद्घाटन किया गया जिसमें पशु चिकित्सा एवं प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी की पुस्तकें विश्वविद्यालय के छात्रों को निशुल्क उपलब्ध रहेंगी। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति डॉ. सोहन सिंह छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत देने की घोषणा भी की गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए निदेशक डॉ. भवानी सिंह राठौड़ ने कहा कि विपरीत परिस्थितियों के बाद भी समाज में पशु चिकित्सा भर्ती में में इतने चयन होना गर्व की बात है। हमें सामाजिक भाव रखते हुए प्रयास करते रहना चाहिए, सफलता अवश्य मिलेगी। डॉ. नरेंद्र सिंह जालिमपुरा, श्रीमती राजकुमारी राठौड़ ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में कर्नल देवी सिंह राठौड़, डॉ. देवेंद्र सिंह जोधा, डॉ. मूल सिंह राठौड़, डॉ. देवी सिंह, डॉ. तरुणा भाटी, डॉ. नरेंद्र सिंह राठौड़, डॉ. देवेंद्र सिंह मेड़तिया सहित नव चयनित पशु चिकित्सा अधिकारियों एवं समाज के छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में हाल ही में आरपीएससी द्वारा आयोजित परीक्षा में चयनित हुए पशु चिकित्सा अधिकारियों को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन जितेंद्र सिंह बीका, श्रेया कंवर, रुद्राक्षी राठौड़ एवं चेल्सी चौहान द्वारा किया गया।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि.	23.08.2024 से 26.08.2024 तक	बजटा, केकड़ी, रामथला चौराहा, जिला-अजमेर
02.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2024 से 27.08.2024 तक	मसीतावाली हैड, जिला-अनूपगढ़
03.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2024 से 27.08.2024 तक	श्री जलंधर नाथ जी मंदिर धाणसा, तह. भीनमाल, जिला-जालौर (जालौर-भीनमाल रेल मार्ग से मोदरान स्टेशन उतरें, वहां से निजी बसें हैं।)**संपर्क**- विक्रम सिंह धाणसा - 8107135547
04.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2024 से 27.08.2024 तक	श्री कांबेश्वर महादेव मंदिर काना कोलार बेड़ा, जिला - पाली, (शिवगंज व बेड़ा गांव से बसें व टैक्सी उपलब्ध हैं।) **संपर्क सूत्र** मंगल सिंह बेड़ा-7073705963, उदय सिंह बेड़ा - 9413500869
05.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2024 से 27.08.2024 तक	कानासर, तहसील एवं जिला - बीकानेर
06.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2024 से 27.08.2024 तक	अनापुर छोटा, तह.-धानेरा, जिला-बनासकांठा (गुजरात)
07.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2024 से 26.08.2024 तक	मालपुर, तहसील - मालपुर, जिला - अरवल्ली (गुजरात) **संपर्क सूत्र**- 9428027928
08.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2024 से 27.08.2024 तक	नुआ, रतनगढ़, जिला - चुरू **संपर्क सूत्र**- 8209765794
09.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2024 से 27.08.2024 तक	बांदरा, प्रांत - बाड़मेर ग्रामीण (बाड़मेर से कवास मार्ग पर)
10.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2024 से 27.08.2024 तक	मालण माता, हरसाणी से रोहिड़ाला मार्ग पर स्थित जिला-बाड़मेर।
11.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2024 से 27.08.2024 तक	श्री श्रद्धा विद्या भारती संस्थान माध्यमिक विद्यालय गेडाप **संपर्क सूत्रः** श्री दिलीप सिंह गेडाप - 9549746631 श्री बजरंग सिंह गेडाप - 9413168194
12.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2024 से 27.08.2024 तक	लीला पोखर (जैसलमेर) जैसलमेर व रामगढ़े से बस है। **संपर्क सूत्रः** 9983259069, 9413168194
13.	प्रा.प्र.शि.	25.08.2024 से 27.08.2024 तक	खारघर, नवी मुंबई **संपर्क सूत्रः** श्री माधुसिंह तलेटा- 9167035345 श्री गजेन्द्रसिंह अर्चिना- 9820131178
14.	प्रा.प्र.शि.	12.09.2024 से 15.09.2024 तक	श्री हनुमान जी की बगीची बाला, तह. आहोर,जिला-जालौर, (बिशनगढ़ एवं भाद्राजून से बसों की सुविधा है।) **संपर्क सूत्र** - बृजपाल सिंह बाला - 8094092013, राजेंद्र सिंह भवराणी - 9413123738
15.	प्रा.प्र.शि.	12.09.2024 से 15.09.2024 तक	श्री लोलेश्वर महादेव मंदिर दासपा, तहसील- भीनमाल, जिला जालौर, (भीनमाल बागोडा व सायला से बसों की सुविधा है।) **संपर्क सूत्र**- भैरूपाल सिंह दासपा - 9769218714, चंदन सिंह कावतरा - 8058853853
16.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	श्री राम बल्लू जी राजपूत छात्रावास सांचौर **संपर्क सूत्र**- सरूप सिंह केरिया - 9549652662, प्रेम सिंह अचलपुर - 9828099602
17.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	जोधासर, श्री डूंगरगढ़, (जयपुर-बीकानेर राष्ट्रीय राजमार्ग - 11 पर स्थित है) **संपर्क सूत्र**-9001772703, 9783781111
18.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	मोरखाणा, नोखा, (नोखा व बीकानेर से बसें उपलब्ध हैं) **संपर्क सूत्र**-भंवर सिंह मोरखाणा - 9928514502
19.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	बादरे जी की ढाणी, वांकलपुरा, महाबार (बाड़मेर से नोखड़ा सड़क मार्ग पर स्थित)
20.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	मेदुसर, गडरारोड, बाड़मेर
21.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	गौड़ा, सेड़वा, जिला - बाड़मेर
22.	प्रा.प्र.शि.	14.09.2024 से 16.09.2024 तक	तावी, तहसील - लखतर, जिला - सुरेंद्रनगर (गुजरात) **संपर्क सूत्र** - 9825403101
23.	प्रा.प्र.शि.	14.09.2024 से 16.09.2024 तक	काणेटी, तहसील - साणंद, जिला- अहमदाबाद (गुजरात) **संपर्क सूत्र** - 8140312421
24.	प्रा.प्र.शि.	14.09.2024 से 17.09.2024 तक	मेमदपुर, तहसील- वडगाम, जिला-बनासकांठा (गुजरात)
25.	प्रा.प्र.शि.	14.09.2024 से 17.09.2024 तक	भेंसाणा, तहसील - मेहसाणा, जिला - मेहसाणा (गुजरात)
26.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	14.09.2024 से 17.09.2024 तक	कामली, तहसील - ऊंझा, जिला - मेहसाणा (गुजरात)

गजेन्द्र सिंह आऊ, शिविर कार्यालय प्रमुख

रूपपुरा (कुचामन) में स्नेहमिलन का आयोजन

साधना संगम संस्थान के तत्वावधान में कुचामन के रूपपुरा गांव में श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्नेहमिलन 11 अगस्त को रखा गया जिसमें आगामी दिनों में रूपपुरा गांव में शिविर के आयोजन पर स्थानीय समाजबंधुओं से चर्चा की गई। कार्यक्रम में कुचामन प्रांत प्रमुख नत्थू सिंह छापड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

अनीश दयाल सिंह बने केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के महानिदेशक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के महानिदेशक अनीश दयाल सिंह को भारत सरकार द्वारा केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के महानिदेशक का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। उन्हें यह दायित्व 31 जनवरी को नीना सिंह के सीआईएसएफ महानिदेशक के पद से सेवानिवृत्त होने पर मिला है। 1964 में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज शहर में एक राजपूत परिवार में जन्मे अनीश दयाल सिंह 1988 बैच के मणिपुर कैडर के आईपीएस अधिकारी हैं।

परिवार से बड़ी है समाज और राष्ट्र की जिम्मेदारी: संघप्रमुख श्री

आकोड़ा

(पेज एक से लगातार)

वे सरकारी अध्यापक लग गए और उनको बीकानेर से अन्यत्र एक दूरस्थ गांव में नियुक्ति मिली। उसी दौरान 1959 में हल्दीघाटी शिविर लगा और उस शिविर में 19 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने तय कर लिया कि अब से जो मेरा जीवन है वह केवल पूज्य तनसिंह जी के लिए है, मुझे केवल उन्हीं के साथ में रहना है, यदि मेरा कोई कल्याण कर सकता है, यदि कोई मुझे इस जीवन से पार लगा सकता है, तो वह तनसिंह जी ही है। इस संकल्प के साथ मात्र 19 वर्ष की आयु में अध्यापक की नौकरी छोड़ दी और तनसिंह जी के साथ हो गए। घर का सारा भार उनके ऊपर था, छोटे भाइयों के विवाह होने बाकी थे, पिताजी साधारण किसान थे, लेकिन सारी जिम्मेदारी छोड़कर, लगी हुई सरकारी नौकरी को छोड़कर यह संकल्प ले लेना, इस प्रकार का कदम उठा लेना, इस प्रकार का दुस्साहस कर लेना बहुत ही बड़ा वीरतापूर्ण कृत्य था। 1979 में पूज्य तनसिंह जी का देहान्त हो जाता है। इसके तुरंत बाद अचानक नारायण सिंह जी के भीतर योग जागृत होता है। संघ मार्ग पर चलने से क्या उपलब्धि हो सकती है, इसको नारायण सिंह जी ने सिद्ध किया। संघ मानव जीवन के परम हेतु तक पहुंचने वाला मार्ग है, इस बात को उनके जीवन में योग के अवतरण ने सिद्ध किया। उनमें योग जागृत होने के बाद में संघ में भी एक नए उत्साह का जागरण हुआ। संघ दर्शन का नया अर्थ भी उन्होंने समझाया। नारायण सिंह जी यह कहते भी थे कि मैंने अलग से किसी प्रकार की कोई साधना नहीं की, किसी प्रकार की कोई सिद्धि प्राप्त करने के लिए अलग से कोई काम नहीं किया। मैंने मात्र पूज्य तनसिंह जी की आज्ञा का पालन किया है और उनकी आज्ञा थी श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य करना और समाज की सेवा करना। ऐसा करने से यदि मुझे यह सब प्राप्त हो सकता है तो आप सबको भी प्राप्त हो सकता है। 1979 से 1989 के उन 10 वर्षों में संघ का कार्य अन्यों की दृष्टि में शिथिल हुआ लगता है लेकिन जो नारायण सिंह जी के साथ में उस समय रहे, उनका कहना है कि वह जो 10 वर्ष की साधना है उसका परिणाम आगे के 25 वर्षों में जो संघ का विस्तार हुआ है, उसके रूप में सामने आया। आज जो संख्या के दृष्टिकोण से विस्तार का काम हो रहा है, उसकी नींव उन दस वर्षों में पूज्य नारायण सिंह जी द्वारा ही डाली गई। जयंती कार्यक्रम में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने कार्यक्रम का संचालन किया। शहर में रहने वाले अनेकों स्वयंसेवक एवं समाजबंधु सपरिवार कार्यक्रम में शामिल हुए।

संघशक्ति में आयोजित कार्यक्रम के अतिरिक्त भी देश भर में श्रद्धेय रेडा की जयंती उत्साहपूर्वक मनाई गई। दक्षिण गुजरात संभाग में सूरत स्थित पंचासरा भवन में 28 जुलाई को माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में नारायण सिंह जी जयंती के उपलक्ष्य में पारिवारिक स्नेहमिलन का आयोजन हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी ने एक गीत में लिखा है - 'चाहे एक ही जले पूरे स्नेह से जले ऐसे दीप चाहिए।' उनकी चाह थी कि भले ही उनको एक ही व्यक्ति मिले लेकिन ऐसा व्यक्ति मिले जो पूरी निष्ठा से इस कार्य में लग जाए। नारायण सिंह जी ऐसे ही दीपक थे जो अपनी पूरी क्षमता से जले और किसी भी परिस्थिति से कभी विचलित नहीं हुए। उनको पाकर तनसिंह जी की चाह पूरी हुई। संभाग प्रमुख खेत सिंह चादेसरा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। 4 अगस्त को सुजानगढ़ में स्थित आर के मैरिज गार्डन में साधना संगम संस्थान कुचामन सिटी के तत्वावधान में पारिवारिक स्नेहमिलन का आयोजन कर नारायण सिंह जी की जयंती मनाई गई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ कर्म, ज्ञान एवं भक्ति के समन्वय वाला संपूर्ण योग मार्ग है। इस मार्ग पर चलकर योग की ऊंचाइयों को प्राप्त करके नारायण सिंह जी ने इस बात को सिद्ध किया। मोहन सिंह प्यावां, राजेंद्र सिंह धौलिया, गुलाब सिंह, मिथिलेश कंवर गेडाप ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के पश्चात स्नेहभोज भी रखा गया। चौहटन स्थित विरात्रा पब्लिक स्कूल में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक कमल सिंह रानीगांव ने उपस्थित समाजबंधुओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि नारायण सिंह जी के जीवन के प्रत्येक क्षण से हम कुछ न कुछ सीख सकते हैं। उदयसिंह देदुसर ने नारायण सिंह जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन प्रान्त प्रमुख लाल सिंह आकोड़ा ने किया। बाड़मेर शहर प्रांत में मल्लीनाथ छात्रावास स्टेशन रोड बाड़मेर में आयोजित जयंती कार्यक्रम में संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चूली ने कहा कि जिस प्रकार नारायण सिंह जी ने संघ का कार्य करते हुए जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त किया, उसी प्रकार हम भी इस मार्ग पर निष्ठा से बढ़ते रहें तो हमारा भी जीवन सार्थक हो जाएगा। कमल सिंह गेहूं ने नारायण सिंह जी का जीवन परिचय दिया। श्री कृष्णा छात्रावास दानजी की होदी बाड़मेर में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी कृष्णसिंह राणीगाँव ने रेडा का जीवन परिचय दिया और उनसे प्रेरणा लेकर हनुमान जैसा सेवा भाव जीवन में लाने की बात कही। बाड़मेर शहर प्रांत में नेशनल हाईवे पर स्थित द सक्सेस हॉस्टल में भी जयंती मनाई गई जिसमें कृष्ण सिंह राणीगाँव सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बाड़मेर जिले के सीमांत कस्बे गडरारोड़ स्थित श्री हरसिद्धि शिक्षण संस्थान में भी जयंती समारोह आयोजित किया गया। बीकानेर के अनुपगढ़ प्रान्त के आरडी 465 मंडी में भी नारायण सिंह जी की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई जिसमें मंडी के अलावा लालावाली, रानेर, शेरपुरा, खरबारा, मोतीगढ़, छतरगढ़ आदि गांवों के समाजबंधु मातृशक्ति सहित सम्मिलित हुए। यशवीर कंवर बैण्याकाबास ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि परिवार एवं समाज के निर्माण में नारी की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसलिए समाज की बालिकाओं को संस्कारित बनाना आवश्यक है।

धंधुका

इसके लिए अपनी बालिकाओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा एवं शिविरों में अवश्य भेजें। अनूपगढ़ प्रांत प्रमुख शक्ति सिंह आशापुरा ने पूज्य नारायण सिंह जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। बीकानेर शहर स्थित संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में भी जयंती मनाई गई जिसमें खींव सिंह सुल्ताना ने नारायण सिंह जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। बीकानेर में रहने वाले समाजबंधु एवं मातृशक्ति कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। बीकानेर के झंझेऊ गांव में स्थित चिलाय माता मंदिर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। मां भगवती छात्रावास गढ़ सिवाना में भी जयंती मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी ने पूज्य नारायण सिंह जी का जीवन परिचय बताते हुए उनसे प्रेरणा लेकर निरंतर श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य करते रहने की बात कही। सिवाना प्रांत में कल्ला रायमलोत राजपुत बोर्डिंग हाउस गढ़ सिवाना, कुंडल और भाटा में भी जयंती मनाई गई। पादरू के निकटवर्ती कांखी ग्राम स्थित जुंझार श्री राहिंग जी राठौड़ मन्दिर परिसर में भी जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम में ओडियो विजुअल के माध्यम से नारायण सिंह जी का जीवन परिचय बताया गया। शिव प्रांत में राव चांपा संस्थान व मातेश्वरी शाखा भियाड़ में जयंती मनाई गई जिसमें प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह भियाड़ द्वितीय सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बाडमेर संभाग के सेडवा प्रांत में स्थित भूपाल छात्रावास, गंगासरा में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख कालू सिंह गंगासरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। गुड़ामालानी प्रांत के बूठ गांव में भी जयंती मनाई गई जिसमें प्रान्त प्रमुख गणपत सिंह बूठ सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। प्रान्त में मीठड़ा, उण्डखा व सूर्य हॉस्टल नया नगर में भी जयंती मनाई गई। बालोतरा प्रान्त में श्री मल्लीनाथ शाखा वरिया, वीर दुगार्दास हॉस्टल बालोतरा, थोब, मेवानगर, कल्याणपुर, दईपड़ा खींचियान, हाउसिंग बोर्ड बालोतरा, बुड़ीवाड़ा, टापरा एवं रेवाड़ा जेतमाल में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें स्वयंसेवकों व समाजबंधुओ ने उपस्थित रहकर श्रद्धेय नारायण सिंह जी को श्रद्धांजलि दी। पद्मिनी बालिका शाखा आकोड़ा व दुगार्दास शाखा आकोड़ा में भी जयंती मनाई गई। कार्यक्रम का संचालन गगन कंवर आकोडा.ने किया। बायतू प्रांत में जाजवा, चिडिया व कानोड में कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें मूलसिंह चादेसरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। प्रांत के नोसर, लापुदडा, पाटोदी और चादेसरा गांवों में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। चितौड़गढ़ प्रांत में श्री भवानी क्षत्रिय धर्मशाला आसावरा माताजी में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। मेवाड़ वागड़ संभाग में उदयपुर स्थित बीएन महाविद्यालय में, भीलवाड़ा में, सलूंबर स्थित बाण माता मंदिर परिसर में एवं गनोड़ा (बांसवाड़ा) में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। जोधपुर संभाग के शेरगढ प्रांत के बालेसर मंडल में रावलगढ, राजगढ, सोलंकिया तला व बेलवा में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। बेलवा में आयोजित कार्यक्रम में प्रांत प्रमुख भेरु सिंह बेलवा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बेदु (जोधपुर) में भी जयंती मनाई गई। जालोर के निकटवर्ती देसु गांव के हनुमान मंदिर प्रांगण में भी रेड़ा की जयन्ती मनाई गई एवं पारिवारिक स्नेहभोज का आयोजन किया गया। संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने कहा कि नारायण सिंह जी ने पूज्य तनसिंह जी की इच्छानुसार एक आदर्श स्वयंसेवक के रूप में जीवन जीकर सम्पूर्ण योग मार्ग के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया। जालौर संभाग में रानीवाड़ा प्रांत के लाछीवाड़ गांव में भी जयंती मनाई गई जिसमें प्रांत प्रमुख महेंद्र सिंह कारोला सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। पाली प्रांत में सोजत के गुड़ा चतुरा एवं देवली हुल्ला में जयंती मनाई गई। राजपूत सभा भवन, पाली और छोटी रानी में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। आयुवान निकेतन, कुचामन सिटी व श्री अमर छात्रावास नागौर में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सीकर में श्री कल्याण राजपूत छात्रावास एवं दुर्गा महिला विकास संस्थान, नाथावतपुरा में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। जैसलमेर में जवाहर राजपूत छात्रावास, के डी आर छात्रावास एवं भटियाणी छात्रावास में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। श्री राजपूत छात्रावास रामगढ़ एवं श्री मोहनगढ़ दुर्ग परिसर में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। जैसलमेर संभाग के चांधन प्रांत में डेलासर और देवीकोट गांव में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें प्रांत प्रमुख उम्मेद सिंह बडोड़ागांव सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। मूलाना शाखा में भी जयंती मनाई गई। पीपली (अलवर), जामडोली (दौसा), भैंसड़ा (पोकरण), तरवर डेर (बाखासर), श्री प्रताप राजपूत छात्रावास नीमकाथाना, मेड़तियों की ढाणी (तनावड़ा), श्री सुमेर पब्लिक स्कूल भिनाय आदि स्थानों पर भी जयंती मनाई गई। चुरू जिले के रतनगढ़ क्षेत्र के बण्डवा एवं नुवां गांव में भी जयंती मनाई गई।

गुजरात में अहमदाबाद जिले के धंधुका में स्थित राजपूत बोर्डिंग में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रवीण सिंह धोलेरा उपस्थित रहे। भावनगर शहर प्रांत की तक्षशिला शाखा में एवं मोरचंद प्रांत के अवानियां गांव में भी जयंती मनाई गई। दोनों कार्यक्रमों में संघ के केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। पालनपुर प्रांत के पांथावाड़ा गांव में स्थित रामजी मंदिर में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। गोहिलवाड़ संभाग के भावनगर शहर प्रांत की राजपूत बोर्डिंग शाखा में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें केंद्रीय कार्यकारी महेंद्रसिंह पांची और वरिष्ठ स्वयंसेवक मंगलसिंह धोलेरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। गुजरात में गांधीनगर, काणेटी, भैंसाणा, सिहोर (देत्रोज) आदि स्थानों पर भी जयंती मनाई गई। झालावाड़ प्रांत के मोढवाना व राजराजेश्वरी में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। महाराष्ट्र संभाग में दक्षिण मुंबई प्रान्त की तनेराज शाखा और उत्तर मुंबई प्रान्त की जयमल फत्ता शाखा बोरीवली में भी श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेड़ा की जयंती मनाई गई। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

भावनगर

सूरत

देसू

यादों के झरोखे से: श्रद्धेय शिवबख्श सिंह जी चुई

वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय शिवबख्श सिंह चुई के देहावसान पर स्वयंसेवकों द्वारा उनके साथ बिताए समय के संस्मरण प्राप्त हो रहे हैं जिनमें से कुछ यहां प्रकाशित किए जा रहे है-

(1) बात लगभग चालीस साल पहले की है। सन् 1985 के ग्रीष्मकालीन अवकाश में जैसलमेर के रामकुंडा स्थान पर ओटीसी शिविर लगा। बाद में इस शिविर को बड़ा बाग नामक रमणीय स्थल पर स्थानांतरित कर दिया गया। यह मेरा पहला शिविर था। मेरे लिए यह शिविर बहुत ही आनन्द दायी और प्रेरणा दायक रहा। उस समय योगीराज पूज्य स्व. नारायण सिंह जी संघ प्रमुख हुआ करते थे। पूज्य गुरुदेव श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर हमारे पथक शिक्षक थे और आदरणीय अजीतसिंह जी धोलेरा हमारे घटनायक थे। हमारे घट के कुछ दूरी पर ही पूज्यश्री योगीराज का एक आम के पेड़ से लटकता झूला था। शायद वही कार्यालय घट भी था। सबकुछ लीला लैर थी लेकिन मटिया साफा, धोती व कमीज धारी लाल चिट्ट ओजस्वी चेहरे व सफेद बालों वाला एक अधेड़ उम्र दराज आदमी अपने अलबेले अंदाज के कारण हमको बहुत भाता था लेकिन जागरण प्रभारी होने के कारण कुछ कष्टदायक भी लगता था, जो अलसुबह शंखनाद और विशाल की कनफट कर्कश ध्वनि से मीठी-मीठी नींद में खलल डालता था। उनकी विशाल हर बार हमें स्पंदित करती थी, जगाती थी, कर्तव्य पथ पर अग्रसर करती थी लेकिन पात्र में सम्यक समझ का अभाव था। जब भीतर खोजा तो पता चला कि प्रेय से श्रेय की ओर ले जाने वाला यह मानवी किसी देवदूत से कम न था। हर घट के एक-एक स्वयंसेवक को सांघिक जीवन से सराबोर करने वाला मनीषी आज भले ही इस लोक में नहीं है लेकिन उस दिव्य पुरुष की मधुर स्मृतियां सदैव मेरे मन मस्तिष्क में छायी रहेगी। आपके द्वारा गाया जाने वाला जागरण गीत - संघ ने शंख बजाया भैया... आज भी मेरे मानस पटल में गुंजायमान हो रहा है। मेरे गुरु, मेरे मार्गदर्शक, मेरे शिक्षक आदर्श!!! आपको मैं तो क्या कोई भी संघबंधु भूल नहीं सकता। सदैव नींद में सोतों हुओं को जगाने वाला आज स्वयं चिर निद्रा में सो गया। माट्साब!!! अब आपके बिना हमें कौन जगायेगा!! कौन ओजस्वी वाणी में वीररस के सहगान सुनायेगा!! कौन विविध कार्यक्रमों की समय समय पर तीक्ष्ण विशल बजायेगा... नमन मेरे आदर्श गुरुवर... शत शत नमन!!!!

दीपसिंह रणधा,
सेवानिवृत्त शिक्षक (डिंगल रसावल शोध संस्थान बाड़मेर)

(2) पूज्य माट्साहब श्री शिवबक्शसिंह जी से पहली बार मिलने और दर्शन लाभ का शुभ अवसर गुरला उच्च प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्राप्त हुआ। दोपहर के इतिहास पर चल रहे बौद्धिक में पूज्य श्री की बातों और जानकारी ने मुझे उनकी ओर आकर्षित होने के लिए मजबूर कर दिया। खाली समय में मैं आप श्री को मिलने उनके पास ही वरिष्ठ जनों के घट में चला गया। चरण स्पर्श कर जय संघ शक्ति कहा तो उन्होंने मुझे पुनः परिचय पूछ लिया, मैंने परिचय में जैसे ही अपना गांव बताया तो मेरे प्रति न जाने क्यों उनकी आत्मीयता और अधिक बढ़ती गई, उन्होंने गहनता से पूछा कि वास्तव में भवरानी के हो? मैंने कहा - हां हुकम। तो उन्होंने अपने संस्मरण बताए कि पूज्य धौकलसिंह जी का गांव वही भवरानी? मैंने कहा - हां हुकम। तो पूज्य श्री ने मेरे गांव और पूरे परिवार के समाचार लिए तथा संघ में नियमित आते रहने हेतु प्रेरणा प्रदान की। पूर्व से संघ में रहे पूज्य जवानसिंह जी, मोहनसिंहजी और स्वयंसेवक राजेंद्रसिंह भवरानी और इस शिविर में मेरे साथ लखनपाल भवरानी को लेकर भी उनके साथ काफी चर्चा हुई। पूज्य श्री की वह आत्मीयता और स्मरण शक्ति आज भी मुझे याद है। श्री चरणों में नमन।

गणपतसिंह भवरानी

(3) सितंबर 2003 में आयोजित प्रशिक्षण शिविर रामदेवरा, हालांकि यह पहले कर्मचारियों के लिए ही था परन्तु संख्या कम रहने के कारण इसे आम पीटीसी में परिवर्तित कर दिया गया था। यह संघ का मेरा पहला ही शिविर था। शिविर के समापन पर विशेष भोज में खीर बनाई गई थी ।श्री शिवबक्ष सिंह जी चुई शिविर के संचालक थे। वे सभी परोसने वालों को निर्देश दे रहे थे। अचानक ही पास में स्थित ड्रम से हाथ धोकर मेरे साथ आकर बैठ गए। थोड़े हंसे और अपनी मायड़ भाषा में बोले - रमैं तो वैसे खीर कम ही खाता हूँर। लेकिन उनका अचानक मेरे साथ बैठकर भोजन करने से मुझे उनकी सादगी बहुत पसंद आई। पहले मुझे लगता था ये शिविर संचालक हैं, बड़े ओहदेदार है, टेबल कुर्सी पर बैठकर भोजन करेंगे। लेकिन उनकी सादगी ने मुझे संघ की ओर प्रेरित किया।

अमर सिंह रामदेवरा

हमारा अस्तित्व

कुछ लोग अपने व्यक्तिगत व राजनीतिक स्वार्थ हेतु देश व समाज को तोड़ने के उद्देश्य से 'ठाकुर का कुआं' कविता को अपने-अपने अंदाज में प्रस्तुत कर रहे हैं। वर्तमान में तो उस कुएं का कोई अस्तित्व नहीं है, परंतु प्राचीन काल में जब था तब इसी ठाकुर के कुएं से पूरे गांव की प्यास बुझती थी। यही ठाकुर जब क्षत्रिय राजा-महाराजा थे, तो अपनी संपूर्ण प्रजा का पालन किया करते थे। तब तो कोई छूत-अछूत का भेद नहीं बताता था। प्राचीन समय में भी सबको बराबर काम दिए जाते थे। तब प्रजा के सुख-दुख की सारी जिम्मेदारी को ठाकुर (क्षत्रिय) पूरी ईमानदारी से निभाते थे। फिर सब यह क्यों भूल जाते हैं, कि वह राजा भी एक क्षत्रिय (ठाकुर) होता था। किसी एक व्यक्ति ने कहीं कुछ देखा या अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को व्यक्त करने के लिए 'ठाकुर का कुआं' नामक एक कविता लिखी और लोगों ने अपने ख्यालों में एक क्रूर व निर्दयी ठाकुर की छवि बना ली। ये भारतवर्ष है जो केवल और केवल हम क्षत्रियों के त्याग और तप से अखंड भारत बना था। रहने के लिए जगह ठाकुर की, भोजन के लिए अन्न ठाकुर के खेत का और फिर लिखा जाता है, कि वह सभी बेचारे थे और इस धरती पर केवल एक ठाकुर ही निर्दयी है। जो सत्य है, उसे मिटाया नहीं जा सकता और जो हमारा है, उसे कोई छीन नहीं सकता। खेत ठाकुर का, बैल ठाकुर के, खाद-बीज ठाकुर के, यहां तक की पानी भी ठाकुर के कुएं का, फिर आपने उसमें खेती की और आपको उसका हिस्सा भी मिल गया। फिर भी आप बेचारे! यह कहां का न्याय है?

इस सृष्टि के प्रारंभ से ही क्षत्रिय एक महान दानदाता रहा है। अपने देश और अपनी प्रजा के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगाने की हिम्मत और हौसला हम क्षत्रियों के खून में है। आज भी सरहद पर मिटने वालों में अधिकांश क्षत्रिय ही होते हैं। हम क्षत्रियों ने अपनी इस धरा को अखंड भारत का रूप देने के लिए अपनी 565 रियासतें, 43 गढ़ और 18,700 किले व 40 लाख एकड़ जमीन दान कर दी थी। हम क्षत्रियों के इस महान त्याग को वे लोग कभी नहीं समझ पाएंगे जो हमारी दान दी हुई जमीन पर रह रहे हैं और अब कुछ गज जमीन के लिए अपनों का खून बहा रहे हैं। इस सूखे मरुस्थल में गंगा लाने वाले भागीरथ को भी लोग भूल गए, क्योंकि वे क्षत्रिय थे? जब छपनिया अकाल पड़ा था तो हम क्षत्रियों (ठाकुरो) ने अपने भंडार गृह आम जनता के लिए खोल दिए थे। वर्तमान में क्षत्रियों के उपकार को चाहे सभी जाति-वर्ग के लोग भूल जाएं, पर ईश्वर ने हमेशा हम पर अपना आशीर्वाद रखा है। तभी इस धरा की रक्षा करने वालों का सिर कटने के बाद भी धड़ अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ता रहा है। अपनी आखिरी सांस तक मातृभूमि व मान बिंदुओं की रक्षा करते रहे और मृत्यु के बाद भोमिया व झुंझार बनकर अपने वचन निभाने वाले भी ठाकुर ही है। अब ना हम भूलेंगे और न ही अपने आने वाली पीढियां को यह भूलने देंगे कि जब इनको लोकतंत्र चाहिए था, तो हम क्षत्रियों ने अपना राजतंत्र छोड़ दिया था। जब इन्हें संसद की जरूरत हुई तो हमने अपने राजमहल छोड़ दिए थे। हमने अपने देश को बचाने के लिए अपने महलों के खजाने खोल दिए थे। समस्त जनता को शिक्षित करने के लिए विद्यालय व महाविद्यालय बनवा दिए थे। लेकिन वर्तमान में हर सरकारी ओहदे पर वही लोग रह रहे हैं, जो अपने बयानों में ठाकुर को निर्दयी बताते हैं। हमसे हमारा ही अस्तित्व छीना जा रहा है। शिक्षा वह बड़ा हथियार है, जिससे हम इस जमाने में अपना खोया हुआ वर्चस्व वापस पा सकते हैं। दूसरा महत्व हमारे संस्कार और रीति-रिवाजों का है। जो हमारे लिए कवच का कार्य करते हैं। जिसने हमें अन्य लोगों से भिन्न बनाकर रखा है। तभी तो हर कोई अपने नाम के साथ सिंह व ठाकुर लगाकर राजपूत बनना चाहता है। क्षत्रिय बनने के लिए त्याग व तप की आवश्यकता होती है। अपने देश व मातृभूमि की रक्षार्थ, अपना सर्वस्व न्योछावर करने का जुनून चाहिए होता है।

रतन खंगारोत

(पृष्ठ एक का शेष)

परिवार से...

प्रथम कार्यक्रम में महाराष्ट्र सम्भाग प्रमुख रणजीत सिंह आलासन ने रेडा का जीवन परिचय देते हुए संघ साधना के फलस्वरूप उनके जीवन में अष्टांग योग के प्रकटीकरण के बारे में बताया। कार्यक्रम में बांद्रा, दादर, अंधेरी, कांजूर मार्ग, खारघर आदि क्षेत्रों से सैकड़ो समाजबंधु उपस्थित रहे। बोरीवली कार्यक्रम में पाबुदानसिंह दौलतपुरा, पवनसिंह बिखरनिया सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन उत्तर मुंबई प्रान्त प्रमुख शंभु सिंह धीरा ने किया। कार्यक्रम में मलाड, भायंदर एवं बोरीवली शाखा के स्वयंसेवक शामिल हुए। 4 अगस्त को नवी मुंबई मंडल की पृथ्वीराज शाखा तुर्भे में भी जयंती मनाई गई। पुणे में श्री अक्कलकोट स्वामी समर्थ मंदिर (गणेश पैठ) में जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। हैदराबाद के सिकंदराबाद में भी 28 जुलाई को नारायण सिंह जी की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर सामूहिक भ्रमण का भी कार्यक्रम रखा गया जिसमें तनेराज शाखा एवं वीर दुगार्दास शाखा के स्वयंसेवकों ने यादगिरीगुट्टा गोल्डन मन्दिर, श्री लक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी एवं घटकेसवर का भ्रमण किया। गोपाल सिंह भियाड़ ने रेड़ा का जीवन परिचय प्रस्तुत किया।

टाइगर मैन फतेह सिंह की स्मृति में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

टाइगर मैन के नाम से प्रसिद्ध स्वर्गीय फतेह सिंह राठौड़ के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सवाई माधोपुर में रणथंभौर रोड स्थित फतेह पब्लिक स्कूल में राजपूत प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन 11 अगस्त को किया गया जिसमें 10वीं एवं 12वीं कक्षा में 90% से अधिक अंक अर्जित करने वाले राजपूत समाज के बालक-बालिकाओं को सम्मानित किया गया, साथ ही अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली राजपूत समाज की प्रतिभाओं को भी सम्मानित किया गया। श्री राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई के मुख्य आतिथ्य में आयोजित इस कार्यक्रम में अनेकों गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे।

नारायण सिंह खिरजां का देहावसान

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायण सिंह जी खिरजां का

देहावसान 01 अगस्त 2024 को हो गया। उन्होंने अपने जीवन काल में श्री क्षत्रिय युवक संघ के 25 शिविर किए जिनमें 8 उच्च प्रशिक्षण शिविर, 10 माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर, 6 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर एवं एक विशेष शिविर शामिल हैं। 28-30 अगस्त 1955 में आयोजित बोरावड प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर उनका प्रथम शिविर था। नारायण सिंह जी के छोटे भाई विशन सिंह भी श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हैं। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

सामाजिक कार्यकर्त्ता मानसिंह ईटावा भोपजी का निधन

जयपुर जिले के ईटावा भोपजी गांव के निवासी और समाज में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता मान सिंह नाथावत का निधन 11 जुलाई 2024 को 94 वर्ष की आयु में हो गया। ईटावा भोपजी के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में 34 वर्ष तक शिक्षा के रूप में सेवाएं देने वाले नाथावत ने अनेकों छात्रों को, जो आर्थिक रूप से कमजोर थे, उनकी शिक्षा का खर्च स्वयं उठाया। सेवानिवृत्ति के पश्चात भी वे सक्रिय रहकर विद्यालय के विद्यार्थियों को निरंतर प्रेरित एवं मार्गदर्शित करते रहे। उनके अनेक शिष्य आईएएस, उपकुलपति, आरएएस, डॉक्टर, इंजीनियर जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर पहुंचे हैं। सामाजिक भाव से ओतप्रोत मान सिंह ने अपने गांव में श्री क्षत्रिय युवक संघ के चार शिविर भी आयोजित करवाए। आपके निधन पर केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, पूर्व सांसद गोपाल सिंह शेखावत, पूर्व सांसद सुमेधानंद सरस्वती सहित आने को गणमान्य व्यक्ति एवं विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि श्रद्धांजलि देने पहुंचे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक शंकर सिंह खानपुर, नरपत सिंह चिराणा एवं प्रवीण सिंह विजयपुरा ने भी उनके निवास पर पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

माननीय संघप्रमुख श्री का सूरत व बीकानेर प्रवास

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघ प्रमुख माननीय श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास 27 व 28 अगस्त को सूरत में प्रवास पर रहे जहां उनके सान्निध्य में दक्षिण गुजरात संभाग की वार्षिक कार्ययोजना बैठक भी आयोजित हुई। सूरत शहर स्थित पंचासरा भवन में आयोजित बैठक में उपस्थित स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि शाखा हमारे लिए ऊर्जा के निर्माण का माध्यम है, इसलिए इस वर्ष को शाखा वर्ष के रूप में मनाते हुए अधिक से अधिक शाखाएं प्रारंभ करनी है। विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में हमें जो ऊर्जा खर्च करनी होती है, उस ऊर्जा का निर्माण शाखा से ही होगा। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ मात्र संस्था या

संगठन ही नहीं है बल्कि यह सभी सामाजिक व्याधियों के लिए एक औषधि है, जड़ी बूटी है। संघ एक साधना पद्धति है जिसके द्वारा हम अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं और यदि हमारा जीवन, हमारा आचरण श्रेष्ठ होगा तो समाज भी श्रेष्ठता की ओर बढ़ेगा। हम भाग्यशाली हैं कि पूज्य तनसिंह जी द्वारा बताए इस साधना पथ के पथिक बनने का हमें अवसर प्राप्त हुआ है। संभाग प्रमुख खेत सिंह चांदेसरा ने इस वर्ष के संगठनात्मक स्वरूप की जानकारी दी एवं संभाग के लिए पूरे वर्ष की कार्ययोजना प्रस्तुत की। शिविर, शाखाएं, पथप्रेरक एवं संघशक्ति की सदस्यता, स्नेहमिलन, संपर्क यात्राएं, महापुरुषों की जयंतियां आदि विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की गई एवं लक्ष्य तय किए गए। बैठक में सूरत शहर एवं सूरत ग्रामीण प्रांत के स्वयंसेवक शामिल हुए। 3-4 अगस्त को माननीय संघप्रमुख श्री बीकानेर प्रवास पर रहे जहां उनके सान्निध्य में बीकानेर शहर के वीर दुगार्दास नगर में स्थित संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में दो दिवसीय संभागीय कार्ययोजना बैठक संपन्न हुई।

तीन सत्रों में संपन्न हुई बैठक के प्रथम सत्र में संघ के स्वयंसेवक के आदर्श जीवन के बारे में बताते हुए संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संघ के स्वयंसेवक के रूप में हमें इस प्रकार का जीवन जीना चाहिए कि हमें देखकर अन्य लोग प्रेरणा प्राप्त करें। ऐसा तभी होगा जब हम समाज, राष्ट्र और मानवता के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए उसका पालन करें। द्वितीय सत्र में बताया गया कि जिस सत्ता ने हमें यह जीवन प्रदान किया है उसकी चाह के अनुरूप ही हमारा जीवन होना चाहिए। सद्मार्ग पर चलकर ही हम ईश्वर की सच्ची उपासना कर सकते हैं और अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। तृतीय सत्र में शाखा पर चर्चा हुई जिसमें संघप्रमुख श्री ने नियमितता और निरंतरता के महत्त्व को समझाया। संभाग प्रमुख रेवंतसिंह जाखासर ने बीकानेर संभाग की पूरे वर्ष की कार्ययोजना प्रस्तुत की एवं बिंदूवार लक्ष्य तय करते हुए स्वयंसेवकों को दायित्व सौंपे। बैठक में वरिष्ठ स्वयंसेवक उमेदसिह सुल्ताना, भंवरसिंह उदट, ईश्वर सिंह चनाना, भवरसिंह जोगलसर, जोरावरसिंह भादला, बजरंगसिंह रॉयल, भागीरथसिंह सेरूणा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

समारोहपूर्वक मनाई तूंगा युद्ध की 237वीं वर्षगांठ

तूंगा युद्ध, जिसमें सवाई प्रताप सिंह के नेतृत्व में जयपुर की सेना द्वारा आधुनिक हथियारों से सज्जित मराठों और मुगलों की संयुक्त सेना को परंपरागत हथियारों से लड़ते हुए परास्त किया गया था, की 237वीं वर्षगांठ 28 जुलाई को

उत्साहपूर्वक मनाई गई। तूंगा युद्ध के नायक बिसाऊ के सूरजमल की तूंगा में स्थित छतरी पर आयोजित कार्यक्रम में रामगढ़, पचवारा, भईपुरा, बाढ़ बडवा, चंदौली आदि गांवों के लोग पहुंचे एवं सूरजमल जी को पुष्पांजलि अर्पित की। युवा इतिहासकार राजवीर सिंह चलकोई, एकलव्य सिंह बिसाऊ, नरेंद्र सिंह निमेड़ा, शक्ति सिंह बांदीकुई आदि वक्ताओं ने कार्यक्रम को संबोधित किया एवं सूरजमल जी को इतिहास का महान नायक बताते हुए उनसे प्रेरणा लेने की बात कही। वक्ताओं ने कहा कि तुंगा का युद्ध सिर्फ राजस्थान और जयपुर के लिए ही नहीं बल्कि पूरे देश और विदेश के इतिहास में भी अपना विशिष्ट स्थान रखता है। फ्रांस के इतिहास में भी तूंगा युद्ध को प्रमुखता से पढ़ाया जाता है। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रधानाचार्य रघुवीर शरण शर्मा और राधेश्याम मैलन ने तूंगा युद्ध की विस्तृत जानकारी दी।

महारानी पद्मावती बालिका महाविद्यालय पलवल का शिलान्यास

11 अगस्त को दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के पलवल में महारानी पद्मावती बालिका महाविद्यालय पलवल का शिलान्यास हरियाणा प्रदेश के मुख्यमन्त्री नायब सिंह सैनी एवं सरकार के मंत्री दिनेश प्रताप सिंह द्वारा किया गया। महाराणा प्रताप भवन के अध्यक्ष हरेंद्रपाल सिंह राणा के प्रयासों

से लगभग एक करोड़ रुपये की लागत से बेटियों के लिए बन रहे इस कालेज के निर्माण के लिए लंबे समय से प्रयास चल रहे थे। शिलान्यास कार्यक्रम में अनेकों स्थानीय समाजबंधु उपस्थित रहे।

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की तीन दिवसीय भ्रमण कार्यशाला संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की तीन दिवसीय भ्रमण कार्यशाला का आयोजन 9 से 11 अगस्त तक हुआ जिसमें विभिन्न जिलों से शामिल हुए 45 प्रतिभागियों द्वारा चित्तौड़गढ़ और मांडलगढ़ क्षेत्र का भ्रमण किया गया। कार्यशाला के प्रथम दिवस पर सभी ने एक दूसरे का परिचय प्राप्त किया, तत्पश्चात चितौड़गढ़ दुर्ग का भ्रमण किया गया। जौहर कुंड, रानी पद्मिनी महल, बप्पा रावल का राजतिलक स्थल, जयमल जी और कल्ला जी की छतरी, रावत बाघ सिंह का स्मारक, कुम्भा महल, विजय स्तंभ आदि विभिन्न स्थानों को देखा एवं उनके विषय में ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त की। दोपहर में दुर्ग स्थित नर्सरी में भोजन पश्चात पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित 'वैरागी चित्तौड़' प्रकरण

का पठन कर ऐतिहासिक स्थलों के दर्शन से मिलने वाली प्रेरणा का अनुभव किया।

किला भ्रमण के पश्चात पूज्य श्री की पुस्तक एक भिखारी की आत्मकथा से 'तुम मेरे समाज हो' प्रकरण का पठन कर समाज के प्रति समाज में काम करने वाले कार्यकर्ता का क्या दृष्टिकोण होना चाहिए, इसे जाना। द्वितीय दिवस को प्रातःकाल शाखा लगाई गई। इसके पश्चात चर्चा का सत्र हुआ जिसमें श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की पांच वर्ष की यात्रा में स्वयं और समाज में हुए परिवर्तन पर सबने अपने विचार रखे। दिन में जोगनिया माता मंदिर में दर्शन के बाद नदी किनारे भोजन किया, तत्पश्चात किन-किन सामाजिक क्षेत्रों में किस प्रकार कार्य किया जा सकता है, इस पर विस्तार से बात हुई। टीम बिल्डिंग, जमीन की उपयोगिता, व्यवसाय की ओर बढ़ना, युवा राजनेताओं का समन्वय, छोटे छोटे कार्यक्रमों द्वारा सक्रिय रहना आदि विषयों पर चर्चा हुई। रात्रिकालीन सत्र में किस जिले में आगामी दिनों में क्या-क्या कार्यक्रम होंगे उसकी रूपरेखा बनाई गई। तृतीय दिवस को सुबह शाखा के साथ कार्यशाला प्रारंभ हुई। कार्य-कारण संबंध पर चर्चा में बताया गया कि प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। समाज में कहीं कमजोरी नजर आती है तो उसके कारण को खोजकर उसका निवारण करना चाहिए और पूज्य तनसिंह जी द्वारा प्रशस्त मार्ग इसी आधार पर काम करता है। इसके पश्चात सभी ने मांडलगढ़ दुर्ग का भ्रमण किया। राणा सांगा की छतरी, चारभुजा मंदिर, परमहंस आश्रम, सागर बावड़ी आदि स्थानों के भी दर्शन किए। दुर्ग भ्रमण उपरांत मांडलगढ़ में राणा सांगा भवन में स्थानीय समाज बंधुओ के साथ बैठक का आयोजन हुआ जिसमें श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने विस्तार से श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्य प्रणाली और उसके दर्शन के बारे में बताया। अल्पाहार के बाद जारेश्वर महादेव मंदिर के दर्शन और झरने में स्नान के बाद वहीं भोजन किया। इसके बाद सभी साथी चित्तौड़गढ़ पहुंचे जहां संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगा सिंह साजियाली, दिलीप सिंह रूद, हर्षवर्धन सिंह रुद भी उपस्थित रहे। यहां पर सभी सहभागियों से यात्रा के अनुभव सुनने के पश्चात कार्यशाला पूर्ण हुई। भ्रमण कार्यशाला के दौरान व्यवस्था का जिम्मा जोगेंद्र सिंह छोटाखेड़ा ने संभाला। कार्यशाला का संचालन रेवंत सिंह पाटोदा ने किया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कॉर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष- 6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक- राजेंद्र सिंह राठौड़।
Email- pathprerak1997@gmail.com Website- www.shrikys.org